सहायक उद्देश्य — अंकेक्षण का सहायक उद्देश्य
निम्नलिखित हैं —

① अशुद्धियों का पता लगाना → अंकेक्षण का
सहायक उद्देश्य अशुद्धियों का पता लगाना है।
कुछ अशुद्धियाँ ऐसी होती हैं जिनका लेखों
के जाँच के दौरान स्वतः ही पता चल जाता
है।

② कपट का पता लगाना → अंकेक्षण का महत्वपूर्ण
उद्देश्य कपट का पता लगाना है। कपट
जान बूझकर सुनियोजित ढंग से किया जाता है।

③ कपट एवं अशुद्धियों को रोकना → अशुद्धियों एवं
कपटों को रोकने के लिए अंकेक्षक प्रत्यक्ष रूप से
कुछ नहीं कर सकता है। जब कर्मचारी को
यह पता चल जाता है कि पुस्तकों के लेखों
की जाँच एक स्वतंत्र व्यक्ति द्वारा की जाती
और उसके द्वारा कपटों एवं अशुद्धियों का पता
चल जाएगा तो इस भय से वह अशुद्धियों
एवं कपटों से बचने का प्रयास करता है।

④ प्रबन्धकों को सलाह देना → यदि प्रबन्धक
आन्तरिक मामलों में अंकेक्षक से सलाह
माँगता है तो वह सलाह दे सकता है।
वैसे सलाह देना अंकेक्षक का वैधानिक कर्तव्य
नहीं है।

⑤ कर्मचारियों पर नैतिक प्रभाव डालना → अंकेक्षक
अपनी जाँच प्रक्रिया से कर्मचारियों में जाँच
का भय जागृत करता है जिससे अशुद्धियों
एवं कपटों की सम्भावनाएँ कम हो जाती है।

⑥ अधिनियम के आदेश की पूर्ती करना → अंकेक्षक
का यह कर्तव्य है कि वह देखे कि
व्यावसायिक संस्थाओं में नियमों का पालन
किया जा रहा है या नहीं। सभी लेखा
पुस्तकें नियमानुकूल बनाया जा रहा है या
नहीं।

उपरोक्त विवेचन से

Scanned with CamScanner

लारेन्स आर डिक्सी के अनुसार,
"अंकेक्षण हिसाब-किताब के लेखों की जाँच है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि वह पूर्णतया एवं सही रूप से सम्बन्धित सौदे के लिए किए गए हैं। साथ ही यह निश्चित हो सके कि सभी सौदे अधिकृत रूप से किए गए हैं।"
आर. जी. वॉक के अनुसार, "एक व्यावसायिक संस्था की हिसाब किताब की सत्यता तथा सही रूप प्रमाणित करना ही अंकेक्षण कहलाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं को देखने से यह स्पष्ट होता है कि अंकेक्षण एक कला है। जो एक योग्य निष्पक्ष, विवेकशील तथा स्वतंत्र व्यक्ति के द्वारा प्रमाणकों, प्रपत्रों, स्पष्टीकरणों तथा सूचनाओं के आधार पर पुस्तकों की ऐसी जाँच की जाती है कि व्यवसाय की वित्तीय एवं आर्थिक स्थिती का सही चित्रण प्रस्तुत कर सके और संतुष्ट होकर अपनी रिपोर्ट दे सके।"

अंकेक्षण के उद्देश्यों को मुख्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है:-

① मुख्य उद्देश्य तथा
② सहायक उद्देश्य।

मुख्य उद्देश्य :— अंकेक्षण का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक लेखों की जाँच कर इनकी सत्यता, पूर्णता एवं नियमानुकुलता का पता लगाए तथा यह देखे कि अंतिम खाते द्वारा प्रस्तुत किया गया सही Picture है या नहीं।

Scanned with CamScanner

B. Com I (H)
Auditing.

Dr. Sunil Kumar
Dept. of Com.
S.N.S. R.K.S. College Saharsa

1.Q. अंकेक्षण की परिभाषा दें, इसके उद्देश्यों का वर्णन करें।

Ans → अंकेक्षण वर्तमान व्यावसायिक जगत का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। यह एक ऐसी कला है जिसके द्वारा किसी व्यवसाय की वास्तविकता का सही पता चलता है। अंकेक्षण एक महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक कार्य है जिसके लिए पर्याप्त कुशलता एवं निर्णय की आवश्यकता पड़ती है। यही कारण है कि व्यावसायिक एवं कम्पनी से सम्बन्धित पुस्तकों की जाँच के लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है। आज वही व्यक्ति कम्पनी का अंकेक्षण कर सकता है जो Chartered Accountant हो।

अंकेक्षण का अर्थ लेखांकन सम्बन्धी पुस्तकों एवं प्रपत्रों की जाँच करना है जिससे इसकी सत्यता, नियमानुकूलता तथा पूर्णता के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके। अंकेक्षण किसी भी व्यावसायिक संस्था की आर्थिक स्थिति की सही जानकारी प्रदान करता है।

अंकेक्षण की परिभाषा अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से दी है।
स्पाइसर एवं पेगलर के अनुसार,

"किसी व्यावसायिक संस्था की पुस्तकों, खातों तथा प्रमाणकों की ऐसी जाँच को अंकेक्षण कहते हैं जिसके आधार पर अंकेक्षक यह संतोषपूर्वक कह सके कि उसको प्राप्त स्पष्टीकरण एवं सूचनाओं के आधार पर साथ ही पुस्तकों में जो लिखित है उसके आधार पर संस्था का चिट्ठा उचित रूप से बनाया गया है जो व्यापार की सही आर्थिक स्थिति को प्रकट करता है। लाभ-हानि खाता वित्तीय वर्ष की सही एवं उचित चित्र प्रस्तुत करता है, यदि नहीं तो किन-2 बातों से वह संतुष्ट नहीं है और क्यों?"

Scanned with CamScanner

यह स्पष्ट हो जाता है कि अंकेक्षण का मुख्य उद्देश्य किसी व्यावसायिक संस्था के लाभ हानि खाता, आर्थिक चिट्ठा का सही एवं सच्चा चित्र प्रस्तुत करना है।

Sunil Kumar
07/05/2020

Scanned with CamScanner